एकल औरत की इन्सानी पहचान

परित्यक्ता संस्कृत का शब्द है जो ग़रीब, अनपढ़ छोड़ी हुई गांव की औरतों के लिए प्रयोग में आता रहा है। पीड़ादायक होने पर भी यह 'टाकलेल्या' (छोड़ी हुई) शब्द के सम्बोधन से अच्छा है—क्योंकि वो सुनकर लगता है जैसे औरत कोई सिगरेट का छोड़ा हुआ टुकड़ा हो और अकेली औरत शब्द उनकी सच्चाई नहीं क्योंकि गांवों में कितनी औरतें एकदम अकेली रहती हैं?

'परित्यक्ता' शब्द उनकी सच्चाई—उनकी माली हालत का बयान करता है—पति द्वारा छोड़ी औरत, घर भेज दी गई औरत, बग़ैर किसी ज़मीन या जायदाद के अधिकार के—न मैके न ससुराल में। वो मज़बूर है रोज़ की दिहाड़ी पर जीने के लिए, अपने बच्चों को खुद पालने के लिए और बार-बार भाइयों की देहरी से बाहर निकलने के लिए। इन औरतों के हालात हिन्दुस्तानी औरत के सही दर्जे को सामने लाते हैं। पितृसत्तात्मक जाति और वर्ग की परिभाषाओं से घिरे परिवार के दायरे में वो या तो आदमी पर निर्भर हैं—या बेघर, बेज़मीन, बेआधार हैं। पर आज वो अपने आर्थिक आधार और सामाजिक अधिकार की नई लड़ाई लड़ रही हैं। एक नया आर्थिक आंदोलन शुरू कर रही हैं। उनकी संख्या बढ़ती जा रही है जो शायद महिला कार्यकर्त्ताओं की धारणा और जानकारी से परे है। 1987 में जब सर्वे शुरू किया तो हर गांव में एकल औरतों की संख्या बीस से पचास के बीच में थी। इस हिसाब से हर तालुक़ में हज़ारों, प्रान्त में लाखों और देश में करोड़ों एकल औरतें हैं। साथ ही उनका संघर्ष भी फैल रहा है।

1988 में समता आंदोलन और स्त्री मुक्ति संघर्ष, चलवल द्वारा आयोजित सम्मेलनों से आगे अब धरनों, पदयात्राओं और अनगिनत कोर्ट कचहरी और सरकारी दफ़्तरों में लड़ाईयों के दौरान एकल औरतें अपने आंदोलन को बढ़ा रही हैं। वो लड़ रही हैं राशनकार्ड के लिए, घर की मुखिया का दर्जा पाने के लिए, घरों और ज़मीनों के लिए, रोज़गार और कचहरियों में न्याय के लिए।

आज एकल औरत का संघर्ष महाराष्ट्र में महिला आंदोलन का अहम हिस्सा बन गया है जहां हर महिला संगठन ने किसी न किसी रूप में इस मुद्दे को उठाया है। समाजवादी व वामपंथी पार्टियों के महिला संगठनों ने भी एकल औरतों के सम्मेलन आयोज़ित किए हैं। समता आंदोलन ने बम्बई में 'परित्यक्ता मुक्ति यात्रा' की है। शेतकारी महिला अगाड़ी का मानना है कि एकल औरत को उसके नाम से ज़मीन दिलाने से कम से कम मर्दों के लिए औरतों को छोड़ना इतना आसान नहीं होगा। इन सब आयामों से गुज़रते हुए परित्यक्ता औरतों का संघर्ष बहुत सशक्त जगह पहुंच गया है। ग़रीब से ग़रीब, अकेली औरतें इन्सानी पहचान की लड़ाई लड़ रही हैं—अकेले रह पाने की गुंजाइश को बढ़ा रही हैं। □

—महाराष्ट्र में चल रहे एकल औरतों के संघर्ष की झलक।